Name:-Pranali Shivale

Current situation of education in india

नमस्कार, सभी दर्शकों का स्वागत है हमारे चैनल पर, जहां हम रोचक विषयों पर चर्चा करते हैं और मतभेदों में शामिल होते हैं। आज हम एक ऐसे विषय पर बातचीत करेंगे जो हम सभी को प्रभावित करता है:

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की गलत तस्वीर

1. शिक्षा का उद्देश्य: भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य छात्रों को ज्ञान और कौशल प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें परीक्षाओं में सफल होने के लिए तैयार करना है। परीक्षा में सफलता को महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल से ऊपर रखता है।
2. प्रमाणीकरण टेस्ट, ज्ञान और सफलता का समर्थन के लिए माना जाने वाला एक मानक, हमारे शिक्षा प्रणाली का प्रमुख स्तम्भ बन गया है। हालांकि, यह एक-साइज़-फिट्स-ऑल दृष्टिकोण उन सभी छात्रों के भीतर मौजूद विशेष प्रतिभा और रुचियों के सुंदर तारीके को ध्यान में नहीं लेता है। इससे शिक्षा को केवल रटने का कार्य ही बना रह जाता है, महत्वपूर्ण विचार कौशल और रचनात्मकता को नजरअंदाज करता है। यह तंत्र हमें बताता है कि एक ही टेस्ट स्कोर हमारे मूल्य को परिभाषित कर सकता है, व्यक्तिगतता को दबा देता है और अनुरूपता को बढ़ावा देता है।
3. भारतीय शिक्षा के स्तर को लेकर कुछ मुख्य चुनौतियाँ हैं, जिनसे यह साबित होता है कि वह विश्व स्तरीय नहीं है। यहां कुछ क्षेत्रों को ध्यान में रखकर इस बारे में विस्तृत विवेचन की जा सकती है|
4. तथ्यों और सिद्धांतों का अधिक महत्व: शिक्षा के कई पहलुओं में, छात्रों को अक्सर तथ्यों और सिद्धांतों को याद करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उनमें रचनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता को विकसित करने का संवेदनशीलता नहीं होती। छात्रों को बस याद करने की आदत में रहकर उन्हें वास्तविक जीवन में उपयोगी कौशल विकसित करने में कठिनाई हो सकती है।
5. पाठ्यक्रम की प्रगति भारतीय पाठ्यक्रम अक्सर विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति से पिछड़ता है, जिससे छात्रों को आधुनिक दुनिया के साथ अपने आप को संबंधित बनाने के लिए उचित ज्ञान और कौशल की कमी होती है। अनेक बार पाठ्यक्रम विभिन्न योजनाओं और तकनीकी परिवर्तनों के साथ समायोजित नहीं होता है, जिससे विद्यार्थियों को आधुनिक समस्याओं का समाधान निकालने के लिए तैयार करने में चुनौती हो सकती है।
6. शैक्षिक ज्ञान निरंतरता महत्वपूर्ण है, हमें करके सीखने की शक्ति को कम महत्वपूर्ण नहीं समझना चाहिए। चाहे यह वुडवर्किंग हो, कोडिंग हो, या रसोई कला हो, इन वास्तविक जीवन कौशलों को हमेशा पीछे की सीट पर रखा जाता है, जिससे छात्र वायदा कक्षा के बाहर के जटिल चुनौतियों के लिए अपर्याप्त तैयार नहीं होते।
7. हमें एक ऐसे तंत्र की आवश्यकता है जो विभिन्न कौशल सेट को पोषित करे, जिससे छात्रों को इस सँवारी जा रही समाज में अपना प्रभाव डालने की क्षमता मिले।
8. पाठ्यपुस्तकों के संग सारी रखत, और अंगिनत कार्यों के बीच, छात्रों की भावनात्मक भलाइयों का अक्सर अनदेखा रहता है। स्कूल शैक्षिक प्रदर्शन को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन अक्सर व्यक्तिगत और पेशेवर क्षेत्रों में सफलता के लिए आवश्यक भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने में असमर्थ रहते हैं।
9. इस शिक्षा के लाभकर आयाम को अनदेखा करके, हम अनजाने में ऐसे स्नातकों की उत्पन्न करते हैं जो शैक्षिक रूप से उत्कृष्ट होते हैं, लेकिन संबंधों को नेविगेट करने, तनाव को संभालने, या मानसिक भलाइयों को बनाए रखने में समस्या का सामना करते हैं। यह समय है कि हम भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को स्वीकार करें और इसे हमारे शिक्षा प्रणाली में समाहित करें।

1. इस प्रकार, इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है, ताकि छात्रों को सिर्फ तथ्यों को याद करने के लिए नहीं, बल्कि समस्या समाधान और रचनात्मक सोच की कौशल को भी सीखाया जा सके।
2. भ्रष्टाचार: भारतीय शिक्षा प्रणाली भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। शिक्षकों और अधिकारियों को अक्सर रिश्वत लेने और अन्य अनियमितताओं में शामिल होने के लिए जाना जाता है।भारतीय शिक्षा प्रणाली में भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए, शिक्षा विभाग को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाया जाना चाहिए।
3. भारतीय शिक्षा प्रणाली के सुधार के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए:

शिक्षा का उद्देश्य: भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य छात्रों को ज्ञान और कौशल प्रदान करना होना चाहिए जो उन्हें रोजगार पाने और अपने जीवन में सफल होने में मदद करें।भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य बहुतंत्रीय होना चाहिए, जिसमें सिर्फ परीक्षाओं में सफलता ही एक मापदंड नहीं होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को जीवन के सभी पहलुओं में समृद्धि और समर्थ बनाना होना चाहिए, जिससे वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

1. शिक्षा को सिर्फ एक ज्ञान का जरिया नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि इसे एक समग्र विकास प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए जो छात्रों को अपनी क्षमताओं का पूरा पोटेंशियल तक पहुंचाने का माध्यम है। छात्रों को नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी, और सही मानवीय मूल्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना चाहिए।
2. शिक्षा के माध्यम से छात्रों को विचारशीलता, समस्या समाधान कौशल, और सहयोगीता का महत्व सिखाना चाहिए ताकि वे अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकें और जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकें। परीक्षाओं के अलावा भी विज्ञान, कला, साहित्य, खेल, और सामाजिक क्षेत्रों में छात्रों की रूचियों और प्रतिभाओं को पहचानने और बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।
3. शिक्षा का उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि छात्रों को उच्च सोचने और सोचने की क्षमता को बढ़ावा देना, और समस्याओं का समाधान निकालने के लिए उन्हें प्रेरित करना है। इसका मतलब है कि शिक्षा सिर्फ पुस्तकों से ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह छात्रों को विचारशील और समर्थ नागरिक बनाने के लिए एक समग्र प्रक्रिया होनी चाहिए।
4. शिक्षा का स्तर: भारतीय शिक्षा प्रणाली को विश्व स्तरीय बनाने के लिए, पाठ्यक्रम को अप-टू-डेट किया जाना चाहिए और शिक्षकों को बेहतर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
5. विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बिंदु:भारतीय शिक्षा प्रणाली छात्रों को "गुलाम" बना रही है, क्योंकि यह उन्हें केवल परीक्षाओं में सफल होने के लिए तैयार कर रही है।भारतीय शिक्षा प्रणाली को "क्रांति" की आवश्यकता है, न कि केवल सुधार।भारतीय शिक्षा प्रणाली को विश्व स्तरीय बनाने के लिए, इसे "उद्योग-केंद्रित" बनाना होगा।